हैयंगवीनमादाय घोषवृद्धानुपस्थितान् ।

नामधेयानि पृच्छन्तौ वन्यानां मार्गशाखिनाम् ।।45।।

अन्वय हैयंगवीनम् आदाय उपस्थितान् घोषवृद्धान् वन्यानां मार्गशाखिनाम् नामधेयानि पृच्छन्तौ (जग्मतुः)।

अनुवाद (राजा और रानी को भेंट देने के लिए) गौ का ताजा घृत (घी) लेकर आए हुए गांव के वृद्ध अहीरों से मार्ग में आने वाले वन के वृक्षों के नाम पूछते हुए दिलीप और सुदक्षिणा जा रहे थे।

टिप्पणियां

हैयंगवीनम् वह घी जो पिछले दिन से दूध से तैयार किया गया है। अर्थात् बिल्कुल ताजा। देखिए.''तत्तु हैयंगवीन यत् ह्योगोदोहोदभवं घृतम्'' अमरकोश। दुह्यते इति दोहः ह्योगोदोहस्य विकार हैयंगवीनम् (हय गो दोह खञ्) यह अनियमित रूप है, यहाँ ह्योगोदोह के स्थान पर हियगु आदेश हुआ है।

घोषवृद्धान् घोषवासिनः वृद्धाः, तान् (मध्यमपदलोपी समास) अथवा घोषेषु वृद्धाः। गांव के वयोवृद्ध (बूढ़े) लोग। 'घोष' का अर्थ है पशुओं के पालक अहीरों की बस्ती और 'ग्राम' का अर्थ है-खेती करने वाले किसानों की बस्ती। राजा और रानी अहीरों की बस्ती-घोष में से गुजर रहे थे। अतः अहीरों ने उन्हें ताजा घी उपहार में दिया। घृत, मधु, दुग्ध आदि की गणना रत्नों में होती है। उनका उपहार विशेष माना जाता है।

विशेष 'वृद्ध', 'मुख्य' तथा 'श्रेष्ठ' आदि शब्दों का साधारण प्रचलित अर्थ है–आयु में बड़ा, मुखिया, प्रधान या अपने से ऊंचा। परन्तु इन शब्दों का प्रायः सामान्य प्रचलित अर्थों के अतिरिक्त विशेष या पारिभाषिक अर्थों में भी प्रयोग होता है। उस दशा में इन शब्दों का अर्थ होता है ऐसा अधिकारी जो चुना गया हो अथवा नियुक्त किया गया हो। प्राचीन भारत में गांव स्वयंशासित होते थे जिनका प्रशासन ग्रामीणों द्वारा निर्वाचित अथवा नियुक्त एक प्रतिनिधि मण्डल चलाया करता था। ऐसे प्रतिनिधि मण्डल के सदस्यों को 'घोषवृद्ध' नाम दिया जाता था। प्रस्तुत श्लोक में 'घोषवृद्ध' शब्द का प्रयोग ऐसे ही पारिभाषिक अर्थ में किया गया प्रतीत होता है। अतः अर्थ है कि जब राजा दिलीप वशिष्ठ ऋषि के आश्रम को जाते हुए मार्ग में आने वाले गांवों में से गुजरे, तब ग्राम सभा के अधिकारी 'घोषवृद्ध' अधिकारी की स्थिति में, राजा दिलीप का राज्य के शासक के रूप में स्वागत करने के लिए उपस्थित हुए। आजकल भी अधिकारी की स्थिति में ऐसे ही शासक का स्वागत करते हैं।

मार्गशाखिनाम् शाखाः विद्यन्ते एषाम् इति शाखिनः। मार्गस्थिताः शाखिनः इति मार्गशाखिनः (मध्यमपदलोपी समास), तेषाम्। मार्ग पर स्थित वृक्षों का (के)।

आदाय आ उपसर्ग दा धातु ल्यप् प्रत्यय- लेकर या लाकर।

पृच्छन्तौ प्रच्छ् शतृ, प्रथमा विभक्ति द्विवचन, दोनों पूछते हुए।